सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

सितम्बर-अक्टूबर, 2006

शैतान का उत्तम औजार

एक समय था - कहानी यूँ आगे बढ़ती है - शैतान ने यह निर्णय लिया कि उसके सेवा निवृत्त होने का समय आया है। उसने अपने व्यापार के सारे औजार बेचने की योजना बनाई - डाह, बैर, ईर्ष्या, वासना, द्वेष, सुस्ती - जहाँ तक हो सके अत्यंत आकर्षक रूप में उसको सजा कर प्रदर्शित किया। मूल्य सूची वैगरह सब लगाई।

शैतान के उन उपकरणों में से एक फानाकार औजार दिखने में बिलकुल हानिकारक नही था। मगर प्रदर्शनी में लगे सब वस्तुओं में से अधिक दाम का था। उत्सुकता से भर किसी ने शैतान के पास जाकर पूछा कि उस औजार को वह क्या कहता है। शैतान का मुस्कराहट, धूर्त हंसी मे बदल गयी। वह 'निराशा ।' उसने उत्तर दिया।

'मगर उसकी कीमत इतना अधिक क्यों है?' पूछताछ करने वाला अड़ा रहा।

'क्योंकि', शैतान ने उत्तर दिया, अब तक जितने भी उपकरण मेरे पास थे, उन में यह सब से उपयुक्त है। मैं इन सब में, किसी की तुलना में भी, इस निराशा के इस्तेमाल से बहुत कुछ हासिल कर सकता हूँ। इस से मैं मनुष्य की अन्तरात्मा को तोड़कर खोल देता हूँ। और एक बार अन्दर पहुँच गया तो, जो मैं चाहूँ, आदमी से

पृष्ठ ३ पर..शैतान का उत्तम औजार..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

अपने हृदय को समझना

'यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन सा बड़ा कार्य करते हो? क्या गैरयहूदी भी ऐसा ही नहीं करते? अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।' मत्ती (५:४७, ४८)

परमेश्वर के वचन का, हम अपने आचरण में पालन नही करते। अगर हम सिर्फ अपने दोस्तों को नमस्कार करें तो, सही, मगर हर कोई ऐसा करता है। अगर हम अपने बैरियों से प्रेम करते है। अपरिचित व्यक्तियों को नमस्कार करते है। हमें उपेक्षित करने वाले लोगों का भी हम अभिवादन करते है, तब हम स्वर्गीय पिता के बच्चे ठहरेंगे। 'जब वह मुझे देखती है, अपना मुहँ फेर लेती है', ऐसा मुझसे किसी ने कहा। यह बहुत बुरी बात है। ऐसे लक्षण और कार्य, मसीह के आत्मा के विरुद्ध है। हृदय में किसी के प्रति कटुता और कुछ कडुवाहट रखकर वह पिता परमेश्वर की आराधना करें, यह कितनी भयानक बात है। हमें अपनी कमियों के बारे में पूर्ण रूप से अवगत रहना चाहिए। एक असली मसीही, पहले अपनी ही कमियों के बारे में जागरूक रहता है।

एक विश्व-विख्यात वायलिन वादक ने कहा, 'तारों पर जरा सा भी हटकर, गलत स्थान पर उंगली रखने से एक गलत स्वर निकलता है। जब मैं ऐसी गलती करता हूँ, अपने स्वर की उस थोडी सी गलती को भी मैं जान लेता हूँ। अगर दो दिन बिना साधना किये रहा तो मेरे परिवार को यह पता चल जाता है। अगर मैं और थोडे दिन साधना किये बिना रहता हूँ, तो सारी दुनिया मेरी गलती जान जाती है।' जब सारी दुनिया को मालूम है और फिर भी तुम्हें अपनी कमियों का पता नही चलता तो अपने आपको मसीही मत कहो। यह सिर्फ हंसी की बात होगी! तुम्हें पहले यह जान लेना चाहिए कि मसीह के आत्मा से कहाँ पर भटक गये हो। पहले यह समझना जरूरी है। और यह भी जान लेना जरूरी है कि जो तुम कर रहे हो वह गलत है। नही तो, परमेश्वर से संपर्क खो बैठोगे।

जहाँ यह स्थिति है कि हो रही गलती के बारे में सब जानते है। फिर भी प्रचारक और अगुवाई करने वाले उस के बारे में नही जानते या समझते है। वह बहुत गम्भीर बात है। एक प्रचारक होने के नाते, पहले अपनी असफलताओं और गलतियों को जान लेना जरूरी है। मुझे पहले अपने आप को दीन करना है। और तभी दूसरों का मार्ग दर्शन करना है। इसलिए बाइबल आम लोगों के पापों के विषय में ज्यादा बात नही करती। पहले राजाओं के पापों के बारे में बात करती है और बाद में राज-पुत्रों या नबियों के पापों के बारे में। हाँ, अगर तुम इस विषय में सावधान हो तो, यह समझो कि बाकी सब विषयों में भी सावधान हो। तब संजीवन फैलेगा। और तुम्हारी चारों ओर वृद्धि होगी। परमेश्वर ने मुझे अपनी जवानी के दिनों से यही सिखाया। 'अपने हृदय का ध्यान रखो' लोगों के सामने अपने प्रदर्शन के बारे में चिन्ता ना करो। वह अनावश्यक है। पहले, परमेश्वर के सामने अपने हृदय को साफ और सीधा रखो।' यही सब कुछ है जो उन्होंने मुझे सिखाया। और मैं हमेशा इसी का पालन करता आया हूँ।

'तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।' तुम और मैं यह नही कह सकते कि हम सिद्ध है। वहाँ तुलना करने के लिए एक माप दिया गया है - 'जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता'। इसलिए किसी दूसरे से अपनी तुलना मत करो। और यदि यह कहो, 'मैं ठीक हूँ। मैं एक अच्छा आदमी हूँ। इन कई दूसरे लोगों से मैं बहुत बेहतर हूँ, वग़ैरह।' स्वर्गीय पिता के प्रेम सी क्या चौड़ाई है? 'जिस से कि तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान बन सको, क्यों कि वह अपना सूर्य भलों और बुरों दोनों पर उदय करता है, और धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।

भारत देश के विकसित औधोगिक राज्यों में से गुजरात एक है। अगर तुम बम्बई जाओ तो यह देख सकते हो कि बम्बई के लोग गुजरातियों को कुछ खास पसन्द नही करते। सर्वोच्च उद्योगपति, गुजरात के लोग है। और इसलिए उनके प्रति बहुत सारी ईर्ष्या और कारोबार में प्रतिस्पर्धा है। इस संसार के कई क्षेत्रों में यह सच लागू है - जहाँ पैसों से संबंध हो वहाँ ईर्ष्या, और प्रतिद्वंद्व पूरी तरह से सक्रिय है। परमेश्वर ने गुजरात के लोगों पर अपनी आशिषों को बरसाया। मगर

पृष्ठ २ पर..अपने हृदय को..

पृष्ठ १ से..अपने हृदय को समझना...

परमेश्वर ने, कलीसियाँ के प्रति उन लोगों की घृणा को देखा। और परमेश्वर को स्वीकारने में उनके हठीले इन्कार को देखा। तब परमेश्वर ने उनको एक छोटा सा झटका दिया। वह एक पापी की मृत्यु से प्रसन्न नही होते। नहीं, तनिक भी नहीं। मगर जब परमेश्वर धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों पर मेह बरसाता है, यह उनके प्यार की चौड़ाई को दर्शाता है। वह कहते है 'मैं उनको एक और मौका दूँगा।' इसलिए तुम में से जो लोग दिखते हो कि तुम उन्नति पा रहे हो, यह ना समझना कि यह परमेश्वर के खास अनुग्रह का यह चिन्ह है। परमेश्वर के महान अनुग्रह का निशान समृद्धि नहीं हो सकता। नही, मैं तो यह नहीं समझता। अगर एक आदमी के जीवन में कष्ट और असली कठिनाइयों पर विजय पाने की क्षमता आए तो, उसका स्वभाव निर्मल बन जाता है। उस आदमी के जीवन में एक पूर्ण रूप से भिन्न गुण निखर आयेगा। मैं किसी भी सस्ती चीज को नही लाता। परमेश्वर अपने राज्य के निर्माण में जितना आवश्यक है, उस से ज्यादा धन कभी नही देते। मैं इसलिए हमेशा कहता हूँ, 'यह परमेश्वर का धन है। इसको इस्तेमाल करने में मैं बहुत सावधान रहूँ।' इसलिए किसी भी चीज को खरीदने की इच्छा के बगैर मैं गुजर सकता हूँ।, चाहे वह दुकान-क्षेत्र हो या हवाई अड्डे में लुभाने वाली प्रदर्शनशाला हो। खरीदारी के लिए मशहूर शहर में जाकर, किसी दुकान में कदम रखे बिना रह सकता हूँ। अपने उद्धारक की दी हुई मेरी एक बड़ी जिम्मेवारी है - अनन्तकालीन आत्माओं का संरक्षण।

जब हमारे मुख्य केन्द्र में बड़े हॉल का निर्माण हो रहा था, एक खम्भे की नीव डालने के लिए भी हमारे पास पैसे नही थे। अच्छा हैं। हमने किसी से पैसों की माँग नही की। हमने अपने स्वर्गीय पिता की ओर अपने हाथ उठाये। और अधिक विश्वास पाने के लिए उनको पुकारा। बीते सालों में मैं ऐसे ही सेवा करता रहा - अपनी जेब में पैसे भरकर नही। नही तो यह परमेश्वर का काम ही नही कहलाता। यह परमेश्वर को प्रसन्न नही करता। जब हम विश्वास से नही बल्कि धन और कंक्रीट से परमेश्वर के राज्य के निर्माण की योजना बनाते है, तो, परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है।

अगर देनेवाले को कबूल नहीं करते हो, तो दण्ड के अधीन हो। परमेश्वर कहते हैं 'मैंने तुम्हें बहुत कुछ दिया मगर तुमने मुझे कुछ नही वापस दिया, तुमने अपने पड़ौसी से प्रेम नही किया। तुम मिशनरियों को बाहर नही भेज पाये। तुम सिर्फ आराम से बैठे रहे।' परमेश्वर की कलीसिया के बारे में एक आधुनिक धारणा है। मगर यीशु मसीह की कलीसिया में ऐसे लोग है जिन्होंने आत्मत्याग किया और अपने आपको बलि चढ़ाया है। हाँ, ऐसे लोग ही मसीह के शरीर के अँग है।

आजकल चल रही प्रतिकूल-प्रवृत्तियों को देखिये - पैसों के पीछे भाग-दौड़ और घिनौना लालच। ऐसा लालच जो लगातार समय से पहले ही कब्र की ओर लोगों को झपट रहा है। लोग डिग्रियों के पीछे पागल बने है। उनको लगता है कि जिन्दगी में कहीं पर पहुँचने के लिए डिग्री पर डिग्री होना जरूरी है। नवजवानों की सोच, बातें और योजना सिर्फ पैसा है। वे कहते है, 'अगर मैं वहाँ जाऊँ तो, ज्यादा पैसे मिलेंगे।' उन सारी बातों में कहीं पर भी स्वर्गीय पिता की बात है ही नही। ऐसे विचारों और प्रेरणाओं में परमेश्वर के लिए कोई स्थान नही है। कही पर मसीह से तुम्हारी नज़र पूरी तरह से हट गई है। आध्यात्मिक उन्नति और परमेश्वर के साथ-साथ चलना - पैसों से भरा मन, इनकी खोज कभी नही कर सकता।

रविवार की सुबह हम फिर अपने ध्यान को केंद्रित करने की कोशिश करते है। मगर जब दुनिया के साथ-साथ चलने की इच्छा तुम्हारे विचारों पर हावी है, तब परमेश्वर का वचन तुम्हारे हृदय में टिक नही सकता। तुम अपने व्यक्तित्व को टेलिविजन से निकलती गन्दगी से भरने देते हो। उन कार्यक्रमों और मनोरंजन में मग्न रहकर, क्या तुम कभी भी प्रार्थना का आत्मा प्राप्त कर पाओगे? जब मुश्किल से धार्मिकता के लिए भूखे-प्यासे हो तो, क्या परमेश्वर का वचन तुम्हारे हृदय में टिक पायेगा? क्या स्वर्गीय पिता तुम्हें आकर्षक लगेंगे? नहीं। टी.वी और फिल्मों की अश्लीलता तुम को लुभायेगी। जब आखिर में मुश्किलें और समस्याएं उत्पन्न होगी, तब तुम्हारा ध्यान सिर्फ उन कठिनाईयों पर होगा। तुम उस 'सर्व-समृद्ध उद्धारक' को देख नही पाओगे।

मैंने यह पाया कि ऐसे लोग भी है जिनका ध्यान समस्याओं पर से कभी नही हटता। तुम अपने स्वर्गीय पिता की ओर देखो। हमारे उद्धार के कर्ता वहीं है और सिद्ध करनेवाले भी वहीं है। हम सब उस अन्तिम-रेखा की ओर दौड़ रहें है। मुझे यह नही मालूम कि उस समापन-रेखा पर हमारी सफलता कैसी होगी। एक प्रतियोगिता में अन्तिम-रेखा पर ही सब कुछ है। सब की नज़र वहीं पर टिकी है। सब की श्रेणी पूर्ण रूप से उसी पर निर्भर है। यह अन्तिम-रेखा क्या है? रोते और कराहते हुए हम इस दुनिया को नही छोड़े। जोर से 'हल्लेलूया' कहते हमें इस दुनिया को छोड़ना है। एक गुमराह बिल्ली के बच्चे की तरह ठुनकते अगर हमे इस धरती को छोड़ना पड़े तो यह बहुत ही भयावह है। वह जाने का तरीका नही। क्या एक लेखक, अपने काम को पूरा करना नही चाहेगा? बिलकुल, जिसकी शुरूआत प्रभु ने की, उसको पूरा और सिद्ध वह ज़रूर करना चाहेगा। मुझे नही मालूम हम इतना विषयांतर करते है। जब मैं कहीं पर जाने के लिए सफर कर रहा होता तो, एक कप चाय पीने के लिए भी मैं रुकना नही चाहता। क्योंकि इस में पाँच मिनट बीत जाते है। मुझे समय पर सभा में पहुँचना है। दोस्त मुझे रोकने के लिए कोशिश करते है। और कहते है, 'हम आप के लिए ये, और वे तैयार किये है।' बहुधाः मैं सादर इंकार करता हूँ और सीधा मंच पर चला जाता हूँ।

परमेश्वर हमें दिशा देता है। अगर तुम और मैं इधर-उधर रुकने लगे, देखने लगे, तो हम कभी भी उस समापन-रेखा को जीत में पार नही कर पायेंगे। हिचकिचाना हमारे स्वभाव का एक हिस्सा है। खरगोश और कछुअे के बारे में सुना है। खरगोश को लगा कि सोने के लिए समय है। क्योंकि कछुआ बहुत पीछे है। मगर क्या हुआ? कौन पहले उस समापन-रेखा पर पहुँचा? कछुआ। तुम में से कुछ लोग कछुअे की तरह दिखते हो। तुम्हें बहुत निराशा में रहना अच्छी बात नहीं है। उसके बारे में, मैं बहुत कुछ जानता हूँ। हाँ, उसका एक विशेष कारण भी मेरे पास है। क्रूस के पास आते हो, प्रभू यीशु को देखते हो, और स्वर्गीय पिता का सिद्ध स्वरूप उन मे देखते हो तो, तुम कहोगे, 'हाय, मैं उनकी तरह नही हूँ। ओह! परमेश्वर हमारी सहायता करें। - जोशुआ दानिय्येल

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.

BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002

MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840

NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.

GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733

SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

पृष्ठ १ से..शैतान का उत्तम औजार..

वह करवा सकता हूँ। वह कोई मुश्किल काम नही या कुछ चालाकी की जरूरत नही है।

'इस बात पर तुम्हें मुश्किल से विश्वास होगा, फिर भी' शैतान ने आगे कहा, 'बहुत कम लोग यह शक करते है कि यह औजार मेरा है।'

कोई भी समझदार आदमी यह अपेक्षा नही करेगा कि जिन्दगी एक फूलों की सेज होगी। फिर भी उन में निराश होने की प्रवृत्ति है। मानवीय लक्षणों में से यह बहुत प्रचलित प्रवृत्ति है। कई बार, जब लगे कि कठिनाइयाँ और निराशायें एक साथ बढ़ रही हों, जब भविष्य अंधकार में लगने लगे और कुछ अप्रिय घटने की शंका हो, तब टूट जाने की और हार मान कर बहक जाने की बहुत संभावना है। ठीक ऐसे समय पर ही, निराशा के उस बोझ से पीछा छुड़ाने के लिए पूरा जोर देना चाहिए। नहीं तो, निराशा जो अंतिम हार है, आत्मा पर आक्रमण कर के नाश करेगी।

परमेश्वर पर भरोसा रखना ही निराशा का उत्तम इलाज है। परमेश्वर अपने प्राणियों के कष्टों को समझने में अक्षम नहीं है। परमेश्वर कुछ विशेष कारण के लिए हमें वेदना सहने देते हैं। मगर किसी के कंधों के ऊपर बोझ को जरूरत से ज्यादा भारी कभी नहीं होने देते है। निराशा, ऐसा एक चिन्ह है कि हम परमेश्वर के इतने नज़दीक नही रहे है जितना हमें होना चाहिए। सच में, हमने परमेश्वर की उपेक्षा की है। और उनके सहायता के प्रस्ताव को इन्कार किया है।

हर एक की जिन्दगी में निराशा का अपना हिस्सा तो रहता है। मगर जो परमेश्वर के अनन्तकालीन यथार्थ और उनकी सच्चाइयों से अपना नज़र नही हटाता, ऐसी आत्मा पर, निराशा कभी विजय नहीं पा सकती। पौलुस ने सब के सामने एक चुनौती रखी। उन्होंने घोषित किया कि इस पृथ्वी पर - दुःख, पीड़ा, प्रलोभन या निराशा, कुछ भी उनको परमेश्वर के प्यार से कभी अलग नहीं कर पायेगा। परमेश्वर का प्यार एक अभेद्य कवच है। और निराशा का शस्त्र लेकर शैतान व्यर्थ ही उस पर वार करेगा। 'परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त-शस्त्र धारण करो, जिस से तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सको।' (इफिसियों ६:११)

एक दूसरे को माफ़ करते हुए

यह कहानी एक हमशक्ल जुड़वां लड़कों के बारे में है। इन लड़कों की जिन्दगी एक दूसरे से इस तरह घुलमिल कर गुंथ गयी थी कि लगता था, कोई उनको अलग नही कर पायेगा। शुरू से ही वे एक जैसे कपड़े पहनते थे। एक ही स्कूल में जाते थे। और वहीं सब काम करते थे। असल में वे एक दूसरे के इतने करीब थे कि दोनों शादी भी नहीं की। बल्कि अपने पिताजी के देहान्त के बाद वे घर लौट आये। और अपना पारिवारिक कारोबार सम्भालने लगे। उन दोनों के सम्बन्ध को एक सृजनात्मक सहयोग का प्रतीक माना जाता था।

एक सुबह एक ग्राहक उनकी दुकान मे आये और छोटी सी खरीदारी की। एक भाई ने ग्राहक के साथ लेन देन किया। दिए गए डॉलर का नोट नकदी रजिस्टर के ऊपर रख दिया। और उस आदमी को दरवाजे तक छोड़ने गया।

कुछ समय के बाद उसको याद आया कि उस ने क्या किया। मगर अब उस नकदी रजिस्टर के पास गया तो, डॉलर का नोट वहाँ से गायब था। उसने अपने भाई से पूछा कि कहीं उस ने उस नोट को देखा हो, और रजिस्टर में रख दिया हो? मगर उस भाई ने जवाब दिया कि, नोट के बारे उसे कुछ भी पता नही था।

'अजीब बात है', पहले ने कहा, ' मुझे ठीक-ठीक याद है कि मैंने उस नोट को रजिस्टर पर रखा था। और तब से और कोई दुकान में आया ही नही।'

एक छोटी सी रकम को लेकर गुप्त भेद - उस मामले को वहीं पर छोड़ देते तो अच्छा होता और उसका नतीजा कुछ नही निकला होता। फिर भी, एक घंटे के बाद, उस भाई ने फिर से पूछा, 'क्या तुम निश्चित हो कि उस डॉलर नोट को नही देखा और रजिस्टर मैं नही डाला?' इस दफा उसकी बातों में शक स्पष्ट नज़र आ रहा था। उस लगाए गये इलज़ाम को समझने में, दूसरा भाई बहुत तेज़ था। वह सफाई देते गुस्से से भड़क उठा।

अब तक उन दोनों के बीच स्थित भरोसे में आयी यह पहली दरार की शुरुआत थी। वह दरार और बढ़ती गयी। वे दोनों भाई इस मामले के बारे में विचार-विमर्श करने की कोशिश करते थे। और हर दफा नये आरोप

और प्रत्यारोप उस काढ़े में जुड़ जाते थे। आखिर में हालत इतनी बुरी बन गयी कि उन्हें अपनी साझेदारी तोडनी पड़ी। दुकान के बीच में बंटवारे की दिवार खड़ी कर दी गई। जो एक वक्त प्रेम से भरी साझेदारी थी अब खफा से भरी प्रतिस्पर्धा बन गयी। वास्तव में, उनका व्यापार, पूरे समुदाय में, विभाजन का कारण बना। एक दूसरे के विरुद्ध, प्रत्येक जुड़वा भाई, अपने समर्थकों को बढ़ाने की कोशिश में लगे रहे। यह लड़ाई बीस साल से भी ऊपर चली।

तब एक दिन, एक गाड़ी उनकी दुकान के सामने आकर रुकी। अच्छी वेश-भूषा पहने एक आदमी, गाड़ी से उतरे और एक तरफ की दुकान के अन्दर गये। उन्होंने, वहाँ के दुकानदार से पूछ-ताछ की कि उस इलाके में वह कब से व्यापार कर रहे थे। उस आदमी को पता चला कि बीस साल से भी ऊपर हो गया है। तब उस अपरिचित व्यक्ति ने कहा, 'तब तुम्ही वह आदमी हो।' 'कुछ बीस साल पहले', उन्होंने कहा, 'मैं जगह जगह, बिना काम के भटक रहा था। तुम्हारे शहर में बाक्स कॉर से आया था। मेरे पास पैसे बिलकुल नही थे। और मैंने तीन दिन से कुछ नही खाया था। जब मैं तुम्हारी दुकान के पीछे, गली से गुजर रहा था, तब मैंने अन्दर झाँका था। तब मैंने देखा कि दुकान के सामने मेज पर डॉलर का नोट रखा था। मेरा पालन एक मसीही परिवार में हुआ था। और मैंने अपनी पूरी जिन्दगी में इससे पहले कभी चोरी नही की थी। मगर उस सुबह मैं बहुत भूखा था। मैं प्रलोभन में आ गया। मैं चुपके से अन्दर आया और उस डॉलर के नोट को ले लिया। तब से वह बात मेरे मन पर भारी बोझ बन गयी।

अंत में मैंने यह निश्चय किया कि मैं तब तक शान्ति नही पा सकता जब तक कि मैं वापस जाऊँ और उस पुराने पाप को कबूल कर के सुधार लूँ। क्या आप उन पैसों को वापस लेकर, उसकी

पृष्ठ ४ पर..एक दूसरे को माफ करते..

सत्य की परख!

'हे यहोवा, मैं तेरी शरण में आया हूँ, मुझे कभी लज्जित न होने दे। (भजन संहिता ७१:१)'

सूखी हड्डियों से नबूवत

इसलिए नबूवत करके उनसे कह कि प्रभु यहोवा यों कहता हैः हे मेरी प्रजा के लोगो देखो, मैं तुम्हारी क़ब्रें खोलकर तुम्हें क़ब्रों में से निकालूंगा और तुम्हें इस्राएल देश में पहुँचा दूंगा। यहेजकेल (३७:१२)

परमेश्वर सब जानते हैं और सब समझते हैं। उस सर्वत्र परमेश्वर का वचन, 'नबूवत' है। सीमित मन का असीम मन से संपर्क करना ही प्रार्थना है। अगर तुम्हारी प्रार्थना सिर्फ भौतिक चीजों के लिए है तो वह प्रार्थना है ही नही। जो सिर्फ भौतिक चीजों के लिए प्रार्थना करते है, वे परमेश्वर के राज्य में भिखारी हैं। परमेश्वर की समझ पाना, परमेश्वर का ज्ञान पाना और मसीह का स्वभाव, एक मसीही के लिए असली धन-सम्पत्ति है।

जब हम मसीह के पास आते है, वे हमें एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का बनाते है। जब पाप हमारे अन्दर राज्य करता है तो वहाँ एक विभाजित व्यक्तित्व है जो हमारी उदासी, चिंता और दुःख का कारण है। हड्डियाँ कुछ भलाई करने के लिए अपने आप काम नही कर सकतीं। वे सिर्फ खड़खड़ाहट करके कुछ आवाज कर सकती हैं। एक आदमी जो परमेश्वर से सक्रिय संपर्क में नही है, वह अपने आप को नही जानता। कलीसियाँ और सभाओं में लोग जो मन नही फिरायें है, वे सूखी हड्डियाँ है जो आपस में एक दूसरे से टकराते रहते है।

'मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है, जो मनुष्य के भीतरी भागों को खोजकर जाँचता है।'(नीतिवचन २०:२७) 'मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य के विचारों को जानता है, के वल उस मनुष्य की आत्मा के जो उसमें है? इसी प्रकार परमेश्वर के आत्मा को छोड़ परमेश्वर के विचार कोई नहीं जानता।'(कुरिन्थियों २:११) यहोवा का दीपक, मनुष्य के हृदय में प्रकाश लाता है। जब एक मनुष्य अपने आप को समझता है, वह टूट जाता है। मनुष्य से निकला कुछ भी, परमेश्वर के सामने स्वीकार योग्य नही है। मगर जो परमेश्वर के सामने टूटे(अपने को नम्र किये) है, परमेश्वर उन्हें सिखाता है।

'दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़ कर यहोवा की ओर फिरे, और वह उस पर दया करेगा, हाँ, हमारे परमेश्वर की ओर, क्यों कि वह पूरी रीति से क्षमा करेगा।' यहोवा कहता है, 'मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न ही तुम्हारे मार्ग और मेरे मार्ग एक जैसे हैं।' (यशायाह ५५:७,८) जो स्थिर रूप से दिव्य आत्मा के संपर्क में रहते है, केवल वहीं यह समझ सकते हैं। प्रार्थना करना हमारे अंतरात्मा को खोदना है। हमारे मन में ऐसे कई विचार है जो परमेश्वर की ओर से नहीं है। ऐसे विचार हमारे लिए खतरनाक है। और तुम उस विचारों का पालन करने जा रहे हो। लूत के मन में खतरनाक विचार थे। परमेश्वर के समक्ष प्रतीक्षा करके अपने विचार ठीक कराने के लिए उन्होंने समय नही दिया। इब्राहीम के मन में भी खतरनाक विचार थे जो उनको मिस्र देश ले गये। मगर उन्होंने फिर परमेश्वर से संपर्क किया। तब परमेश्वर ने कहा, 'मेरे आगे चलो और तुम सिद्ध बनो।'

परमेश्वर ने नबी को यह दिखाया कि इस्राएली लोग सूखी हड्डियाँ है। सूखी हड्डियों से नबूवत करने के लिए, क्या परमेश्वर हम में से किसी को ले सकता है? क्या तुम अपने ही घर में नबूवत कर सकते हो? परमेश्वर का विचार अनन्तकालीन है। जिन लोगों के विचार परमेश्वर के विचार है, वे बहुत शाक्तिशाली हैं। जब तक हम ना टूटे हो और यह जाने कि हम में कुछ भी भलाई नहीं है तब तक परमेश्वर अपने विचार हम में स्थिर नहीं बना सकते। जो दिव्य आत्मा की सक्रिय संपर्क में जीते है, वे एक दिन नबूवत करेंगे। विभाजित व्यक्तित्व और कलीसियाँ फिर जुड़ जाएँगे। हमें आज ऐसे नबियों की जरूरत है जो यह कह पाएँगे 'यहोवा यों कहता है'। ईस्राएली लोग बन्धुवाई में थे। उन्होंने परमेश्वर को छोड़ दिया था। और वे उस नबी को भी मार डालना चाहते थे। उस नबी की नबूवत के अनुसार ही शत्रू आया, उनके देश का विनाश किया और उनको बंदी बनाकर ले गया। अब कलीसियाँ निराशा में है। उन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास नही किया। उन्होंने परमेश्वर के वचन का अपने ही मन से उपदेश दे दिया।

परमेश्वर का आत्मा जब किसी आदमी या औरत पर आता है, ऐसा व्यक्ति कलीसियाँ के लिए बहुत बड़ी आशीष बनता है। परमेश्वर ने नबी को सूखी हड्डियों से नबूवत करने के लिए कहा। केवल कुछ शब्द क्या करेंगे? नहीं, वे सिर्फ कुछ शब्द नहीं है। उस वचन ने ही पृथ्वी की सृष्टि की। परमेश्वर का वचन एक सृजनात्मक शक्ति है। वह दुष्टता का अंत करता है। क्रूस और मसीह के पुनरूत्थान के द्वारा परमेश्वर के ही स्वरूप की हमारे अन्दर सृष्टि करता है। हम पुनः अपने असली परमेश्वर के स्वरूप में बदलने वाले हैं। इसलिए यीशु ने कहा, 'तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।' जब हम स्वयं के लिए मरेंगे (यानि अपना स्वार्थ त्याग देंगे), तब हम परमेश्वर की इच्छा से प्यार करेंगे। शायद हम इसको समझ नहीं पाये, फिर भी। इस काम के शुरुआत में, मेरी आखों में आंसू आते थे, जब मैं सोचता था, 'मेरे भविष्य का क्या होगा? इस काम का क्या होगा?' मैंने परमेश्वर की वाणी को सुना था और उसका पालन किया था। जैसा प्रभूने मुझे सिखाया, मैंने किया। 'परमेश्वर ने मुझ से कहा - क्या तुम ऐसे कहनेवाले व्यक्ति हो? तब तुम सूखी हड्डियों से नबूवत करोगे और वे जी उठेंगी।'

परमेश्वर के काम के लिए एक विशाल सेना इस दुनिया में है। हमें उनको एकत्रित करना है। परमेश्वर ऐसा करेंगे, मगर आइये हम सच्चे रहें। 'और मैं अपना आत्मा तुम में डालूँगा, तुम जीवित हो जाओगे और मैं तुम्हें तुम्हारे निज देश में पहुँचा दूंगा। तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ने ऐसा कहा, और पूरा भी किया है। यहोवा की यही वाणी है।' (यहेजकेल ३७:१४) परमेश्वर ने एक नवजवान का इस्तेमाल किया जो परमेश्वर के साथ सच्चा रहा। परमेश्वर के योजना को काम में लाने के लिए वह दिव्य आत्मा से सक्रिय संपर्क में रहा। उन्ही के प्रभाव के कारण इस्राएली लोग वापस आये। इस्राएली लोग बहुत समय से जो राज्यों में बंटे थे। परमेश्वर ने कहा कि वे उन दोनों को मिलाएगा।

'वे उस देश में रहेंगे जो मैंने अपने दास याकूब को दिया था जिसमें तुम्हारे पूर्वज भी रहे। वे और उनके वंशज और उनके वंशजों के वंशज भी सदैव उसमें रहेंगे, और मेरा दास दाऊद सदैव के लिए उनका प्रधान होगा। मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा जो उनके साथ सदाकाल की वाचा ठहरेगी। मैं उन्हें बसाऊँगा और बढ़ाऊंगा और उनके मध्य सदैव के लिए अपना पवित्रस्थान स्थापित करूँगा।' (यहेजकेल ३७:२५,२६) परमेश्वर महान कार्य करने वाले है। तुम को सिर्फ गहराई तक खोदना है। जो परमेश्वर से नही है उसे निकालना है। और प्रभु के पीछे-पीछे चलना है। हो सकता है कि सब तुम्हे छोड कर चले जाएं; फिर भी तुम्हें सिर्फ परमेश्वर की वाणी सुनते उसका पालन करते आगे चलना है। - एन दानिय्येल

पृष्ठ ३ से..एक दूसरे को माफ करते..

वजह से हुए नुकसान का उचित दाम चुकाने की इज़ाज़त देंगे?

उस आदमी को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस बूढ़े आदमी ने सिर हिलाकर व्याकुल होकर रोना शुरू किया। जब वह भाई अपने संतुलन मे आया, उसने उस आदमी का हाथ पकड़कर कहा, 'मैं चाहता हूँ कि आप बाजु के दुकान में जाये, और जो कुछ भी अभी बताया, वही कहानी को फिर से उन्हें दोहरायें'। उस अपरिचित व्यक्ति ने ऐसा ही किया। मगर इस बार दो बूढ़े आदमी थे। दोनों बिलकुल हमशक्ल थे, और दोनों बेकाबू हो रो रहे थे। मगर एक दूसरे के प्रति उनके हृदय में कडुवाहट के वजह से, हाथ, कितने अमूल्य साल नष्ट हो गये।

सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो ..... ध्यान रखो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट का कारण न बने, जिससे कि बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। (इब्रानियों १२:१४,१५)

- चुनीहुई

विलियम केरी, परमेश्वर का असाधारण जन

विलियम केरी 'आधुनिक मिशनरी संचलन' का संस्थापक है - लगभग विश्व भर के चर्च इतिहासकार यह मानते है। और यह भी कि वे विश्व-इतिहास में प्रमुख मसीही मिशनरियों में से एक है। गरीबी, अस्पष्ट शुरुआतें, अठारहवीं सदी के दहाती फायदा रहित सामाजिक पिछड़ापन, इन सब से झूझते, उस आधुनिक मिशनरी संचलन की स्थापना में, विलियम केरी एक प्रेरणा-शक्ति बनकर उभर आये।

एक सशक्त देशी भारतीय मसीही समुदाय के लिए - इस उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषाओं में बाइबल के अनुवादों को वे पीछे छोड़े गये है। मसीही साहस और समर्पण का एक प्रेरणात्मक उदाहरण बने। उनके आदर्श ने हज़ारों लोगों को उनके पद-चापों पर चलने के लिए प्रेरणा दी है।

वे स्वयं कहते थे कि वे एक धीरे-धीरे काम करने वाले आदमी है। मगर वे उस से बढ़कर थे। उनका दृढ़ इरादे और प्रेरणा प्रद अगुवाई के कारण ही एक संचलन का प्रारंभ हुआ। ऐसा संचलन जो अन गिनत लोगों की जिन्दगी और कई संप्रदायों को बदलें। और अक्षरशः कलीसीया के ढाँचे को ही बदल दिया।

केरी का प्रारंभिक जीवन - सन १७६१, अगस्त १७, मध्य इग्लैण्ड, नॉर्तएम्पटनशायर के पॉलरपुरी नामक गाँव में केरी का जन्म हुआ था। केरी के पिताजी बुनकर, स्कूल के अध्यापक और इंग्लैण्ड के गाँव की कलीसिया में पैरिश पादरी थे। इसका मतलब है कि वह कुछ हद तक पढ़े-लिखे है मगर उन्होंने एक गरीब ग्रामीण और एक साधारण, उलझन रहित देहाती जिन्दगी जिया। विलियम केरी की औपचारिक शिक्षा सीमित थी। फिर भी उन्होंने बहुत जल्दी अंग्रेजी पर ही नही बल्कि लैटिन, ग्रीक, इब्रानी, डंच और फ्रेन्च भाषाओं पर भी प्रवीणता हासिल की। वे इतिहास और भूगोल से उन्हें खास लगाव था। आज कहलाये जानेवाली बॉटेनी (वनस्पति विज्ञान) और बागवानी (हॉरटि कलचर) पढ़ने में भी वे खास रुचि रखते थे।

मगर उन दिनों प्रचलित रिवाज के अनुसार, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी, गरीब माता-पिता ने नवजवान केरी के लिए एक व्यवसाय ढूँढने का प्रयास किया। इस तरह वे चौदह साल की आयु मे जूते बनाने वाले बिकोल्स का चेला बना। उस व्यवसाय में उन्होंने और चौदह साल बिताये।

उन्होंने एक बहुत बड़ा विश्व का मानचित्र बनाकर अपने मौलट्न की झोंपड़ी की दीवार पर लटकाया। विभिन्न देशों के नवीनतम धार्मिक और राजनैतिक आकड़े, जैसे उन्हें मिलाते, वे उस मान चित्र पर लिख देते। इस तरह मिशनरी संस्थाओं के प्रति बाइबल के दृष्टि कोण के बारे में उनको समझ आता गया। जल्दी ही उन्हें दृढ़ विश्वास हुआ कि विदेशों में सुसमाचार का प्रचार करना कलीसिया की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी है। केरी का यह विचार क्रान्तिकारी था। अठारह वीं सदी के कई इंगलैण्ड की कलीसियाँ के नेता काल्विनिस्ट थे। उन्हें पक्का विश्वास था कि सुसमाचार प्रचार करने का महान अधिकार सिर्फ प्रेरितों को ही दिया गया है। और यह भी कि उनके दिनों में समुन्दर पार रहने वालों के उद्धार और मन फिराव, उनकी जिम्मेवारी नही है। इस संबंध में केरी ने यह प्रश्न उठाया - क्या इस संसार के सारे लोगों तक सुसमाचार को ले जाना जरूरी नही है या नहीं?

इस दर्शन से आकर्षित होकर, केरी ने नार्लआप्टनशायर बैप्टिस्ट असोसियेशन के संघ सहकर्मियों के बीच यह प्रश्न उठाया। उसके बदले में उनको एक दो टूक जवाब मिला। उन में से एक ने कहा, 'नवजवान, बैठ जा। विधर्मियों को अपनी ओर फिराने की इच्छा होगी तब परमेश्वर तुम्हारी या मेरी सहायता के बगैर ही वे ऐसा कर लेंगे!'

मगर केरी ने चुप रहना इन्कार किया। नॉटिंगहॉम के एक संघ सभा में उन्होंने प्रचार किया था। उन्होंने कहा, दुनिया भरके लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने के विषय को लेकर फिर जोर दिया। उनका संदेश टिक नही पाया। मगर उनका सन्देश यशायाह (५४:२) पर आधारित था। 'अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर। तेरे विश्वास के पर्दे फैला लिए जाएं, मत रुक अपनी रस्सियों को लम्बी और अपनी खूंटियों को दृढ़ कर।' वह एक उत्तेजक मिशनरियों के लिए अभ्यर्थना थी। उस में दो विषय थे; (१) महान कार्यों की अपेक्षा करो और (२) महान कार्यो के लिए यत्न करो। उस संदेश का प्रभाव सीधा और नतीजा तुरन्त निकला। उस संदेश की प्रतियों की बार बार छपाई होती रही

२, अक्तूबर, सन १७९२ के दिन, के टटरिंग नामक स्थान पर हुई अगली संघ सभा में, इक्कठे हुए लोगों ने एक महत्वपूर्ण निर्णय किया। उन्होंने सुसमाचार फैलाने के लिए पर्टिक्युलर बाप्टिस्ट सोसइटी को बनाने का निर्णय किया। - वही आगे चलकर बाप्टिस्ट मिशनरी सोसइटी बन गयी। एक साधारण बाप्टिस्ट जॉन थॉमस उस बि.एम.सी का पहला नियुक्त व्यक्ति था। वे रॉयल नेवी के आधीन में डॉक्टर बनकर भारत देश गये। स्वतंत्र प्रचारक के रूप में वहाँ रहे। वह वापस इग्लैण्ड में आये। अब वह सेवा करने फिर भारत जाना चाहते थे। केरी ने थॉमस का सहचार बनकर भारत जाने का प्रस्ताव उस नई सोसइटी के सामने रखा। और वह तुरन्त मंज़ूर हो गया। कई बातों में स्वंय केरी अपनी मिश्नरि बुलाहट के उपयुक्त नहीं था। वह ३२ साल का था, शादी-शुदा, तीन नन्हें बेटों का पिता, जिनकी आयु ९ वर्ष से कम थी और गर्भवती पत्नी जो लगभग अनपढ़ थी। फिर भी, केरी गया और कभी वापस इंग्लैण्ड वापस न लौटा। लेकिन जो कीमत उसने, अपनी पत्नी की शारीरिक और मानसिक हालत, साथ ही अपने बच्चों का पालन-पोषण, के बदले चुकाई बहुत भारी कीमत थी। केवल मसीह कर्तव्य और कभी न डाँवांडोल होने वाले प्रयास ने उन्हें संभाला।

भारत में शुरुआती साल - भारत देश में केरी के प्रारंभिक साल अविश्वसनीय रूप से कठिन रहें। उनके दल को असीम चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनके पास जो धन था वह जल्दी समाप्त हो गया। जगह जगह भटकने के बाद सन १७९४ की गर्मी में, अखिरकार वे मद्नबट्टी में बस गये। फिर उनके आने के तुरन्त बाद, उनके पाँच साल के बेटे पीटर केरी को विष ज्वर लगा और वह चल बसा। पीटर की मृत्यु से माँ डोरती केरी की मानसिक को गहरा धक्का लगा। वह दुबारा फिर कभी उस धक्के से उभर नहीं पाई। उन्होंने अपने बाकी दिन केरी के ऊपर चिल्लाते हुए गुज़ारे। और केरी बहुधा, बगल वाले कमरे में, बाइबल को बंगाली में अनुवाद करने के काम में व्यस्त रहते। पीड़ा से तबाह शरीर और व्यवहार में बढ़ते पागलपन के साथ, डोरती केरी अपनी कई भ्रान्तियों में जीती रहीं। और तेरह साल बाद, इक्यावन साल की आयु में वह चल बसी।

सिरमपूर के साल - ईस्ट इन्डिया कंपनी का आगे दुबारा सामना ना करना पड़े, यह समझकर केरी ने कलकत्ता के नज़दीक सिरमपूर में चले गये। यह डेनिष इलाके में था। बाद में आये नये मिशनरी लोग उनसे आ मिले। उन में (मुद्रक) प्रिनटंर विलियम बॉर्ड और हन्ना मार्षमन प्रमुख थे। प्रेरितों के पुस्तक के प्रारंभिक मसीहियों की तरह, केरी का परिवार और उनके नये दोस्तों ने एक साथ मिलकर एक समुदाय में रहने का निर्णय किया। उन दिनों मोरावियन मिशनरी भी ऐसे ही रहा करते थे। उनका सार्वजनिक कोष था। प्रत्येक परिवार की आम ज़रूरतों के लिए आवश्यक पैसों को छोड़कर, सब की मेहनत से आई आमदनी उस कोषागार में डाल दी जाती थी। लाभ में जो भी पैसा आये वह सब मिशन के काम की उन्नति के लिए इस्तेमाल किया जाता। यह अनुमान लगाया गया कि केरी के जीवन काल के दौरान मिशन की उन्नति के लिए लगभग ९०,००० पाउड़ का इस तरह योगदान किया गया। विलियम वॉर्ड ने अपनी पत्रिकाओं में उस समुदाय में पालन किये जाने वाले नियमों का संक्षिप्त वर्णन किया। सब बारी-बारी से प्रचार और प्रार्थना करते, महीने भर एक आदमी पूरे परिवार के विषयों की देखभाल करता, तब कोई दूसरा, आपसी भेदों का निपटारा करने के लिए और एक दूसरे से प्रेम रखने की, व्यक्तिगत प्रार्थना करने के लिए शनिवार की शाम निर्धारित थी। शिक्षा के मूल्यों पर केरी विश्वास करते थे। वह शिक्षा को सामाजिक हितकारी के रूप में नही देखते थे। मगर वह मसीही और गैर मसीही दोनों के लिए शिक्षा एक दीर्घकालीन हित समझता था।

इस सिद्धांत को कार्यान्वित करने में उनके सिरमपूर के साल गुजरे। और इसीलिए केरी ने, उदाहरण स्वरूप, बंगाली, संस्कृत और मराठी के व्याकरण तैयार किये। सन् १८०१ में कलकत्ता के धर्मनिरपेक्ष 'फोर्ट विलियम कॉलेज' में प्रोफेसर का पद स्वीकार किया। उनके द्वारा देश के कई आनेवाले नेता प्रभावित हुये।

बाइबल के अनुवाद और छपाई में, सिरमपूर के ये तीन लोग लगे रहे। जहाँ तक हो सके, एशिया की कई भाषा और बोली में बाइबल का अनुवाद और छपाई की। फलस्वरूप, केरी ने छः अलग भाषाओं में पूरे बाइबल का अनुवाद किया। तेईस दूसरी भाषाओं में नये-नियम का अनुवाद और छपाई हुई। और बाइबल के कुछ भागों का तो कई बोली में अनुवाद और छपाई हुई। केरी के जीवन-काल के दौरान बाइबल की २,१३,००० से भी अधिक प्रतियाँ, सिरमपूर के मुद्रणालय से निकले, जो चालीस अलग-अलग बोली और भाषाओं में है।

सति - सति यानी विधवाओं का अपने पतियों की चिता पर जिंदा जलाये जाना - केरी ने बहुत निडरता से, पंडितों के जरिये, प्राचीन हिन्दू धर्म के शास्त्रों और रचनाओं से आधार (प्रमाण) इक्टठे किये। इस तरह उन्होंने मिशनरियों का विचार दृढ़ किया कि सति का, हिन्दू व्यवस्था समर्थन करती है। उन्होंने दास-प्रथा का भी जोर से विरोध किया। दास-व्यापार का अंत हुआ तो वह बहुत खुश हुए।

केरी की सफल सेवकाई - केरी और उनके सिरमपूर के सहचर ने मिलकर, १५०० से भी अधिक लोगों को बपतिस्मा दिया, जो मसीही बने थे। हज़ारों और लोग उनकी कक्षाओं और सभाओं में हाज़िर होते थे। इसके अतिरिक्त उनके मृत्यु के साल तक, पूरे भारत देश में अठारह मिशन केन्द्रों में पचास मिशनरी सेवा में लगे थे। उनका जीवन कई मिशनरी संस्थाओं के लिए प्रेरणा बना। और उन्होंने भी अपनी संस्थाओं में मिशनरी कार्यो का प्रारम्भ किया। चार्ल्स सिमिअन, हेन्री मार्टिन, और आदोनिराम जड़सन ने भी उन्ही से प्रेरणा पायी। सन् १८३४ तक सिर्फ इग्लैण्ड में ही चौदह मिशनरी संस्थायें बनी। इनके अलावा अमेरिका और यूरोप में भी कई संस्थाये थी, जो मिशनरी प्रयासों में जुटी रहीं। विलियम केरी का प्रेरणात्मक आदर्श जीवन ही इन सब संस्थाओं के अस्तित्व का कारण था।

केरी की दीनता - उनका जीवन असाधारण था - चाहे वह किसी के भी मानक स्तर से तुलना की गयी हो। मगर कभी भी उन्होंने अपने आप को अलग नही समझा। इस के विपरीत, ख्याति से वह घबरा जाते थे। सन् १८१३ में, उनके काम की, हाउस ऑफ कामन्स में प्रशंसा की गयी। जब उनको इस के बारे में कहा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया, 'इस से पहले कि वे मुझे सराहे, मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे मरने दे।' वास्तव में वे अपने आपको को एक धीरे-धीरे काम करने वाले आदमी के रूप में ही देखते थे। उनका भानजा यूस्टस केरी, विलियम केरी की जीवनी का पहला लेखक बना। केरी ने एक बार उनसे कहा, 'मेरे गुजर जाने के बाद अगर कोई मेरी जीवनी लिखने योग्य समझेंगे तो, मैं तुमको एक कसौटी देना चाहता हूँ। उस से तुम समझ पाओगे की वह कहाँ तक यथार्थ है। धीरे-धीरे काम करने वाला होने के नाते, अगर मुझे श्रेय देना चाहे तो वह मेरा सही विवरण दे रहा है। उसके आगे, कुछ भी कहना बढ़ा-चढ़ा कर कहना ही होगा।'

हाँ, विलियम केरी एक नीरस धीरे-धीरे काम करने वाला आदमी था। मगर यह प्रतिभाशाली, उपाय-कुशल, अटल आदमी 'परमेश्वर का असाधारण आदमी' था। - उनकी सफलता से हम यह जान गये है।

मृत्युंजय खिस्त

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।